

॥ श्रीः ॥

नानकचन्दात्मजपण्डितरामलालविरचितः
गृहस्थानांक्षौरनिर्णयः।

— — —
बूंदीनिवासिपंडितरामप्रतापशर्मकृत-
भाषाटीकासहितः ।
— • —

मूल्य : ५ रुपये मात्र ।

मुद्रक एवं प्रकाशकः

खेमराज श्रीकृष्णदास,TM

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,

मुंबई - ४०० ००४.

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ भाषाटीकासहितः

गृहस्थानां क्षौरनिर्णयः

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ गृहस्थानां क्षौरकर्म-
निर्णय उच्यते । तत्र गृहस्थैर्निमित्तं विना साधार-
णक्षौरकर्मणि श्मश्रुकेशादीनां सर्वथा वपनं न कर्त-
व्यम् । अत एव धर्मसिंधुग्रंथे तृतीयपरिच्छेदस्य
पूर्वाधे, कर्त्तनेन हस्वीकृतकेशश्मश्रूनखः स्यात् ।
निमित्तं विना सर्वथा मुंडनं न कुर्यात् न समावृत्तौ

गंगाविष्णवीरितौ रामप्रतापो देशभाषया ।

गृहस्थानां क्षौरकर्मनिर्णयं विवृणोम्यहम् ॥

गृहस्थोंको विशेष कारणके विना सब दाढ़ी और बाल
साधारण हजामत बनवानेके समय नहीं कराना चाहिये ।
इसीलिये धर्मसिंधुग्रंथके तृतीय परिच्छेदके पूर्वाधेमें लिखा
है कि, केश, दाढ़ी और नखोंको कतराकर छोटे करा ले
और विना विशेष निमित्त बिलकुल मुंडन नहीं करावे
क्योंकि समावर्तनमें नहीं मुंडाना ऐसा निषेध लिखा है

मुंडेरन्निति निषेधादित्युक्तम् । अतएव मनुस्मृता-
वपि द्वितीयाध्याये ब्रह्मचारिक्षौरनिर्णयप्रकरणे, मुंडो
वा जटिलो वा स्यादथवा स्याच्छिखाजटः । इत्यादि
ग्रंथेन ब्रह्मचारिणं प्रत्येव शिखाजटत्वविधानं कृतम् ।
नतु गृहस्थिनं प्रत्यपि कुत्रचिच्छिखाजटत्वविधानं
कृतम् । शिखामात्रं जटा यस्य असौ शिखाजटः
अर्थाच्छिखातिरिक्तमुंडितसभस्तशिरस्क इत्यर्थः ।
अन्यत्र स्मृतावपि विना तीर्थं विना यज्ञं मातापि-

दसी कारणसे मनुस्मृतिमें भी द्वितीय अध्यायमें ब्रह्म-
चारीके हजामत बनानेके निर्णयके प्रसंगमें, बिलकुल मुंडा
ले अथवा जटा रखे अथवा शिखामात्रकी जटा इस
वाक्यसे ब्रह्मचारीकेही वास्ते शिखामात्रकी जटा रखनेका
विधान किया है गृहस्थके लिये कहीं भी शिखाजटा अर्थात्
केवल शिखाहीकी जटा हो और शिखाके सिवाय सब
शिरके बाल मुंडा ले ऐसा करनेका कहीं भी विधान नहीं कि-
या । दूसरी स्मृतिमें भी तीर्थ, यज्ञ और मातापिताके मरनेके

त्रोर्मृतिं विना । यो वापयति लोमानि स पुत्रः पितृ
घातकः ॥ इत्यादिग्रंथेन सर्वथा मुंडनस्य निषेध एव
प्रतिभाति । स्मृत्यंतरेपि, प्रयागे तीर्थयात्रार्या
पितृमातृवियोगतः । कचानां वपनं कुर्यात् वृथा न
विकचो भवेत् ॥ इत्यादिग्रंथेन निमित्तं विना सर्वथा
शिरोमुंडनस्य निषेध एव प्रतिभाति । मिताक्षरा-
यामपि पद्धविंशत्यधिकत्रिंशत्कारिकाव्याख्याने,
प्रायश्चित्तकर्मण्येव शिखातिरिक्तं सर्वशिरोमुंडनं

सिवाय जो मनुष्य बाल करावे वह पुत्र पिताका घातकके
समान है इत्यादि वाक्योंसे बिलकुल मुंडानेका निषेधही
दीखता है । और स्मृतिमेंभी प्रयागमें, तीर्थयात्रामें और
मातापिताके देहांतपर केश कटावे अन्यथा व्यर्थ
मुण्डन नहीं करावे इत्यादि वाक्योंसे निमित्तके
विना बिलकुल शिर मुंडानेका निषेधही दीखता
है । मिताक्षरामेंभी तीन सौ छब्बीसवीं कारिकाकी
व्याख्यामें प्रायश्चित्त करनेके समयमेंही शिखा छोड़कर

लिखितम् । नतु साधारणक्षौरकर्मण्यपि तथाहि
एतानि कृच्छ्रादीनि व्रतानि प्रायश्चित्तार्थं यदा
अनुष्ठीयन्ते तदा केशादिवपनपूर्वकं गृहीतव्यानि ।
वपनं च चरेद्व्रतीति गौतमवचनात् । तत्र व्रतीत्यस्य
प्रायश्चित्तव्रतीत्यर्थः । अभ्युदयार्थं व्रते तु नैवं वप-
नम् । वसिष्ठोपि, कृच्छ्राणां व्रतरूपाणां इमश्रुके-
शादि वापयेत् । कुक्षिरोमशिखावर्जमित्याह अग्नि-

सब शिर मुंडाना लिखा है । साधारण हजामत बनवानेके
समयमेंभी ऐसा करना नहीं लिखा । ये कृच्छ्रादिकव्रत जब
प्रायश्चित्त निमित्त किये जायं तब पहले केश दाढी आदि
कटाकर ग्रहण करना चाहिये क्योंकि गौतमका वचन है
कि व्रतवाला मनुष्य केश वपन करावे । यहां व्रतशब्दसे
प्रायश्चित्त निमित्त व्रत समझना चाहिये । काम्यकर्मनिमित्त
व्रतमें केश वपन नहीं कराना चाहिये । वशिष्ठनेभी कहा कि
व्रतरूप कृच्छ्रोंके समय बगलके रोम और शिखाको छोड़
कर दाढी और सब बाल कटावे । अग्निहोत्रके समय और

होत्रे च तीर्थे च वपनं श्मश्रुपूर्वकम् । प्रेतकृत्ये
 राजदण्डे वपनं केशपूर्वकम् ॥ स्त्रियास्तु प्रायश्चित्तार्थं
 व्रतानुष्ठानेऽपि वपनं न कर्तव्यम् । तथा च पराशरः
 वपनं नैव नारीणां नानुव्रज्या च कुत्रचित् । न गोष्ठे
 शयनं तासां न वसतिन् गवाजिनम् ॥ सर्वान्
 केशान् समुद्धृत्य छेदयेदंगुलिद्वयम् । सर्वत्रैव हि
 नारीणां शिरसो मुण्डनं स्मृतम् ॥ पुरुषेषु विशेषो

तीर्थमें पहले दाढ़ी कटाकर मुण्डन कराना और मृतकके
 कृत्यमें और राजाकी ओरसे दण्ड हो तब पहले शिरके
 केश कटाकर मुण्डन करावे । स्त्रीके तो प्रायश्चित्त निमित्त
 व्रतपरसी केश नहीं मुंडाने चाहिये । पराशरने कहा है
 कि स्त्रियोंका वपन न हो और गोवधके प्रायश्चित्तमें जो
 गायके पीछे फिरना, गायोंके रहनेके स्थानमें रहना और
 गोचर्म ओढ़ना लिखा है सो स्त्रियोंसे नहीं कराना और
 केशोंको इकट्ठे हाथमें लेकर दो अंगुलभर काट ले
 यही उनका वपन है और पुरुषोंके लिये संवर्ताचार्यने यह

ऽपि संवर्ताचार्येण दर्शितः । पादेऽगरोमवपनं द्विपादे
 इमश्रुणोपि च ॥ त्रिपादे च शिखावर्ज्यं सशिखं तु
 निपातने । अर्थार्थः । पादप्रायश्चित्तार्हस्य पुरुषस्य
 कं ठादधरतनांगरोम्णामेव वपनम्, अर्द्धप्रायश्चित्ता-
 र्हस्य पुरुषस्य तु इमश्रूणामपि वपनम्, पादोनप्राय-
 श्चित्तार्हस्य तु शिखावर्जितानां शिरोगतानामपि
 केशानां वपनम्, पादचतुष्टयार्हस्य तु सशिखसक-

विशेषता दिखाई है कि चतुर्थांशप्रायश्चित्तमें शरीरके रोम
 काटना, आधे प्रायश्चित्तमें दाढ़ीसमेत अंगके रोम काटना,
 पौन हिस्से प्रायश्चित्तमें शिखा छोड़कर सब केश और रोम
 काटना और पूरे प्रायश्चित्तमें शिखासमेत सब वपन करावे ।
 इसका आशय यह है कि चतुर्थांश प्रायश्चित्तके योग्य
 पुरुषके कण्ठसे नीचेके सब अंगके रोम काटना, आधे
 प्रायश्चित्तयोग्य पुरुषके दाढ़ीभी काट डालनी, पौनभाग
 प्रायश्चित्तके योग्य पुरुषके शिखा छोड़कर शिरके बाल
 काट देना और पूरे प्रायश्चित्त योग्य पुरुषके शिखासमेत

लकेशमात्रस्यैव वपनं कर्तव्यम् । हारीतः राजा वा
 राजपुत्रो वा ब्राह्मणो वा बहुश्रुतः । केशानां वपनं
 कृत्वा प्रायश्चित्तं समाचरेत् ॥ केशानां रक्षणार्थं तु
 द्विगुणं व्रतमाचरेत् । द्विगुणे तु व्रते चीर्णे दक्षिणा
 द्विगुणा भवेत् ॥ एतच्च हारीतस्मृतिवचनं महापात-
 कादिदोषविशेषाभिप्राये द्रष्टव्यम् । विद्वद्विप्रनृप-
 स्त्रीणां नेष्यते केशवापनम् । कृते महापातकिनो

सब केश और रोम काट देना । हारीतका वचन है कि,
 राजा हो राजपुत्र हो अथवा ब्राह्मण विद्वान् हो सब केश
 कटाकरही प्रायश्चित्त करें और जो केश नहीं कटाना चाहे
 तो दूना व्रत करे और दूना व्रत किये पीछे दक्षिणाभी
 दूनी देनी चाहिये । यह हारीतस्मृतिका वचन महापातका-
 दि दोषविशेषके अभिप्रायसे समझना चाहिये । अनुका
 वचन है, महापात गोवध और ब्रह्मचर्यका नाश करने-
 वालोंके बिना विद्वान् ब्राह्मण, राजा और स्त्रीका केश

गोहंतुश्चावकीर्णिनः ॥ इति मनुवचनात् । याज्ञव-
ल्क्यस्मृतावपि विशेषस्थले एव वपनं लिखितं नतु
साधारणक्षौरकर्मण्यपि वपनम् । गंगायां भास्करे
क्षेत्रे मातापित्रोर्गुरोर्व्रते । आधानकाले सोमे च वपनं
सप्तसु स्मृतम् ॥ इति वचनेन सप्तस्थले एव सर्वथा
वपनं दर्शितम् ॥ । अन्यत्र स्मृतावपि विशेषो दर्शितः,
मुंडनं चोपवासश्च सर्वतीर्थेष्वयं विधिः । वर्जयित्वा
कुरुक्षेत्रं विशालां विरजां गयाम् ॥ इति । विशाला इ-

वपन नहीं करना । याज्ञवल्क्यस्मृतिमेंभी विशेष स्थलोंमेंही
वपन करना लिखा है, साधारण हजामत बनानेमेंही मुण्डन
करना नहीं लिखा । गंगाजीपर, भास्करक्षेत्र तीर्थमें माता
पिता और गुरुकी मृत्युमें, गर्भाधानके समय और सोमयज्ञ
करनेमें इन सात जगह वपन अर्थात् मुण्डन करना योग्य
है । इस वाक्यसे सात स्थलोंमेंही सब मुण्डन कराना और
स्मृतिमेंभी विशेषता कही है । कुरुक्षेत्र, विशाला, विरजा
और गयाको छोड़कर सब तीर्थोंमें मुंडन और उपवासका

द्रवारुण्यमुज्जयन्यां तु योषितां मेदिनी । विशाला
मथुरा इत्यपि कचिल्लिखितम्, विरजा नर्मदा
गया कुरुक्षेत्रं च प्रसिद्धमेव । अन्यच्च, राजकार्य-
नियुक्तानां नटानां रूपजीविनाम् । इमश्चुरोमनस-
च्छेदे नास्ति कालविशोधनम् ॥ सिंधुस्नानं द्रुम-
च्छेदं वपनं प्रेतवाहनम् । विदेशगमनं चैव न कुर्या-
द्गर्भिणीपतिः ॥ राजा योगी पुरंध्री च मातापित्रोस्तु

विधान है । मेदिनीकोषमें विशालाका अर्थ उज्जैन लिखा
है और कहीं विशालाको मथुराभी लिखा है । विरजा
नर्मदाको कहते हैं गया और कुरुक्षेत्र प्रसिद्ध ही हैं और भी
लिखा है । राज्यके कार्यको करनेवाले नर और रूपसे
जीविका करनेवाले पुरुषोंको दाढी रोग नसोंके कटानेमें
समयकी शुद्धिकी आवश्यकता नहीं है अर्थात् जब अव-
काश हो अथवा काम पड़े तभी हजामत बनवा लें । गर्भि-
णी स्त्रीका पति समुद्रमें स्नान, वृक्षका काटना, मुंडन, मुरदे-
को पट्टे चाना और विदेशगमन नहीं करे । राजा, योगी, स्त्री,

जीवतोः । मुंडनं सर्वतीर्थेषु न कुर्याद्गर्भिणीपतिः ॥
नारदोप्याह, वपनं मैथुनं तीर्थं वर्जयेद्गर्भिणीपतिः ।
श्राद्धं च सप्तमान्मासादूर्ध्वं चान्यत्र वेदवित् ॥
पाराशरीग्रन्थेपि द्वितीयाध्याये इमश्रुकेशादिसत्त्वबो-
धकं पराशरऋषिवाक्यं वर्तते । यच्च इमश्रुषु केशेषु
यज्जलं देहरोमसुान हस्ताभ्यां न वस्त्रेण जलं विद्वान्
प्रमार्जयेत् ॥ मर्जिते पितरस्तोये सर्वा अपि हि

जिनके मातापिता विद्यमान हों और गर्भिणी स्त्रीका पति
सब तीर्थोंमें मुंडन नहीं करावे । नारदकाभी वाक्य है कि
गर्भिणी स्त्रीका पति मुंडन, संभोग, तीर्थयात्रा और सातेवें
महीने पीछे श्राद्ध नहीं करे । पाराशरी ग्रन्थमेंभी द्वितीया-
ध्यायमें दाढी और केशोंकी विद्यमानताका बोधक पराशर
ऋषिका यह वचन है, विद्वान् ब्राह्मण दाढी केश और
शरीरके रोमोंमें जो जल रह जाय उसको हाथसे अथवा
वस्त्रसे नहीं पोंछे । उस जलको पोंछनेसे उस ब्राह्मणको
सब पितर, देवता और मनुष्य शीघ्रही छोड़ देते हैं अर्थात्

देवताः । तथा सर्वे मनुष्याश्च त्यजंत्यह्नाय तं
 द्विजम् ॥ इति । अत्र स्नानांगतर्पणं विना शरीर-
 मार्जनं न कर्तव्यमिति वदता ग्रन्थकारेण इमश्रुके-
 शादिमार्जनमपि वारितम् । इमश्रुकेशादिसत्त्वे एव
 तेषां मार्जननिषेधबोधकं ऋषिवाक्यं संगच्छते इम-
 श्रुकेशादिसत्त्वे एव मनुस्मृतावपि अष्टमाध्याये दण्ड
 पारुष्यनिर्णयप्रकरणे त्र्यंशतिश्लोके, केशेषु गृहतो
हस्तौ छेदयेदविचारयन् । पादयोर्दाढिकायां च

अप्रसन्न हो जाते हैं । यहां स्नानके अंगभूत तर्पण किये
 विना शरीर नहीं पोंछनेका विधान करते हुए ग्रन्थकारने
 दाढ़ी और केशोंका पोंछनाभी निषेध किया है । सो दाढ़ी
 और केश हों तबहीं उनके पोंछनेका निषेध करनेवाला
 ऋषिवचन बन सकता है और दाढ़ी और केश हों तबहीं
 मनुस्मृतिके आठवें अध्यायमें दण्डपारुष्यप्रकरणका यह
 वचन बन सकता है । तिरासीके श्लोकमें लिखा है कि,
 जो शूद्र ब्राह्मणके बाल, पैर, दाढ़ी, गला और वृषण

श्रीवापां वृषणेषु च ॥ इत्यादिना ग्रंथेन प्रमादात्के-
 शाग्रहणपूर्वके विवादे प्रहारे वा कृतदाढिकाग्रहणपू-
 र्वके विवादे प्रहारे कृते हस्तादिछेदनं दंडं दर्शितम् ।
 अन्यथा केशदाढिकयोस्सत्त्वेन तदग्रहणबोधनं मुधैव
 स्यात् । गृहस्थाश्रमव्यतिरिक्ताश्रमिणां वनवासाभि-
 क्षावृत्तिनिर्वाहकत्वस्य पूर्वसुक्तत्वेन तेषां विवादयो-
 ग्यत्वाभावेन एतद्वचनस्य गृहस्थाश्रमपरतयैव तद्व-

पकडकर लडे तो उसका हाथ बिना शोचे काट डालना
 इस वाक्यसे भूलसे बाल पकडकर विवाद अथवा प्रहार
 करनेका अथवा दाढी पकडकर झगडा वा मारपीट करनेपर
 हाथका काट डालना दण्ड लिखा है । सो जो दाढी और
 केश नहीं हो तो इनका पकडना कैसे हो और जो गृह-
 स्थोंके सिवाय औरोंके विषयमें यह वाक्य माने तो नहीं
 बनता । क्योंकि गृहस्थाश्रमको सिवाय और ब्रह्मचर्य,
 वानप्रस्थ और संन्यासाश्रममें वनवास और भिक्षावृत्ति
 होनेसे उनका विवादमें पडनेकाही संभव नहीं इसलिये यह

व्यवस्थाबोधकत्वात् । संन्यासिनां केशदाढिकयोः
 सर्वथाऽभावाच्च प्रायतया गृहस्थानामेव विवादसंभ-
 वाच्चेति बोध्यम् । अत एव बृहत्पाराशरग्रंथे चतुर्था-
 ध्याये शुद्धिनिरूपणावसरे, सोमभारुकरयोर्भाभिः
 पथः शुद्धिः प्रकीर्तिता । ओष्ठाधरमुखं श्मश्रु सस्नेहं
 भोजनादनु ॥ इत्यादिग्रंथेन भोजनानंतरं सस्नेहं
 श्मश्रु उच्छिष्टकरणं भवतीत्युक्तम् । गृहस्थधर्मनिर्णये

वचन गृहस्थाश्रमके विषयमेंही व्यवस्थाका बोधक है ।
 संन्यासियोंके तो केश और दाढ़ी होतीही नहीं और
 विशेषकर गृहस्थोंकेही लड़ाई झगडा होनेकी सम्भावना
 रहती है । इसीलिये बृहत्पाराशरीग्रंथके चतुर्थाध्यायमें
 शुद्धिके प्रकरणमें लिखा है कि, मार्गकी शुद्धि चन्द्रमा
 और सूर्यकी किरणोंसे होती है और होंठ, मुख और
 दाढ़ीके चिकनाई लग जाय वह भोजन करे पीछे शुद्धि
 होती है । इस वाक्यसे भोजनके पीछे चिकनाई लगी हुई
 दाढ़ीसे उच्छिष्ट नहीं समझना यह सूचित होता है और

एवारुप वचनरुप लिखितत्वेन आश्रमांतरपरतया
लापयितुमशक्यत्वादिति दिक् ॥

श्रावणे चासिते पक्षे दशम्यां बुधवासरे ।

रचितं पुस्तकं चेदं रामलालेन धीमता ॥

इति श्रीनानकचंदात्मजरामलालपंडितविरचितो

गृहस्थक्षौरनिर्णयः समाप्तः ।

यह वचन गृहस्थधर्मके निर्णयमेंही लिखा है । इसलिपे
ब्रह्मचर्यादि, और आश्रमवालोंपर यह नहीं लग सकता ॥

गृहस्थोंको दाढी और शिरके वाल बिलकुल नहीं
कटाना, छोटे करा लेना इसी पक्षको समर्थन करनेके लिये
पण्डित रामलालजीने श्रावणशुक्ल दशमी बुधवारको यह
पुस्तक बनाई है ॥

संस्करण - दिसम्बर २००३, सम्वत् २०६०.

© सर्वाधिकार : प्रकाशक द्वारा सुरक्षित

Printers & Publishers :

Khemraj Shrikrishnadass Prop: Shri Venkateshwar Press, Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi, Mumbai - 400 004.

Web Site : <http://www.Khe-shri.com>

Email : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj For M/s.Khemraj Shrikrishnadass Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai-400 004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune 411 013